IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन महाकाव्यों में लक्ष्मण जी की भूमिका

डॉ. अम्बिका उपाध्याय

असिस्टेंट प्रोफेसर– के.पी.एस. कॉलेज मुण्डेसी, मथुरा

———————————— शोध सारांश ————————————

भगवान श्रीलक्ष्मण अयोध्या में अवतरित हुए उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य अपने बड़े भाई के प्रति प्रेम व भक्ति था। लक्ष्मण राम के बराबर प्रेम दूसरा उदाहरण इस जगत में और कोई नहीं है। लक्ष्मण राम को अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यार हमेशा करते हैं। ऐसे भगवान लक्ष्मण जी जो अयोध्या में दशरथ जी के यहाँ अवतरित हुये। उनकी भारतीय साहित्य रामचरित मानस, गीतावली, वाल्मीकी रामायण, साकेत आदि विविध धार्मिक ग्रन्थों में लक्ष्मण जी की भूमिका अनन्त, अद्भुत, अनुपम, अप्रमेय व अकल्पनीय है। लक्ष्मण जी को शेषनाग का अवतार माना जाता है। मन्दिरों में राम तथा सीताजी के साथ सदैव उनकी पूजा होती है। लक्ष्मण हर काम में सेवाभाव कूट–कूट के भरा हुआ था। लक्ष्मण जी का बड़े भाई के लिये चौदह वर्ष तक अपनी पत्नी से अलग रहना वैराग्य का अच्छा उदाहरण है। ऐसे महान कर्मयोगी, धर्मयोगी व अद्भुत योद्धा, अपने भक्तों का दुख हरने वाले और भगवान राम के परम भक्त व उनके छोटे भाई लक्ष्मण जी पर यह लेख पूर्ण वैधता, सत्यता व प्रमाणित साक्ष्यों के आधार पर यह लेख प्राचीन महाकाव्यों में लक्ष्मण जी की भूमिका लिखा गया है।

''रामरमैया कौ लक्ष्मण सौ भाई''

वर्तमान समय में हम अपने अतीत से शिक्षा लेने में शर्म महसूस करते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के समय में ऐसा होना जरूरी नहीं है पर आज हमारी युवा पीढ़ी तो बीते हुए समय की अनेक गतिविधियों और शिक्षा को यथार्थ में मानती ही नहीं।

आज रामराज्य को कोरी कल्पना बताया जाता है। युवा पीढ़ी को पता होना चाहिए कि भगवान राम जो हजारों वर्षों पूर्व भारतभूमि पर शासन करते थे, ये कोई कल्पना नहीं यथार्थ ही है। राम और उनके चारों भाइयों द्वारा आपसी सौहार्द और व्यवस्थाओं को यथार्थ समझने के कारण उस काल का शासन रामराज्य कहलाया।

रामराज्य के शासक राम के ही समान उनके अनुज श्रीलक्ष्मण से युवा पीढ़ी को जो मूलमंत्र लेना चाहिए वो है अनुशासन। ऐसा अनुशासन जिसके कारण आज वे जाने जाते हैं। संयुक्त परिवार में रहने वाले भाईयों में आपसी समझ तो होती है पर वहाँ थोड़ा ईर्ष्या का भाव देखा जाता है। लेकिन राजा दशरथ के राजपरिवार में सभी भाइयों मे श्रीलक्ष्मण जी सर्वोपरि हैं। उनमें अनुशासन, आपसी समझ, स्वयं को मात्र बड़े भाई राम का मात्र सेवक समझना और उनके आदेश पालन को अपना धर्म समझना यह प्रमाणित करता है कि लक्ष्मण राम को कई नई सामाजिक ऊँचाईयों पर ले जाते हैं। लक्ष्मण ने चौदह वर्षों तक सीताराम की सेवा की। उनकी पत्नी उर्मिला ने इस अवधि मे केवल भावनाओं के सागर में डुबी लगाते हुए कठिन विरह के उस समय को व्यतीत किया। अतः राम तो महान हैं ही परन्तु आज की युवा पीढ़ी रामानुज लक्ष्मण को यदि अपना आदर्श माने तो अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। स्वयं राम ने भी लक्ष्मण जैसा भाई होना, स्वयं का सौभाग्य बनाता है।

प्रमुख शब्द :– रामरमैया, यथार्थ, कर्मयोगी, अप्रमेय, अकल्पनीय, त्रिभुवन, शाश्वत, अरुणोदय, ब्रह्माण्ड, वीरासन, नितब्ध।

श्रीरामचरित मानस हमारे सनातन धर्म की आत्मा है, जो कि गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा लिखित है। यह ग्रन्थ पारम्परिक भाषा में लिखा हुआ है। इसमें महाराज दशरथनन्दन श्री राम का चराचर ब्रह्म के रूप में निरुपण करके वर्णन किया गया है। प्रभू का परिचय देते हुये श्री तुलसीदास जी के शब्दों में –

दोहा – देखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखण्ड।

रोम–रोम प्रति लागे, कोटि–कोटि ब्रह्माण्ड ।। बालकाण्ड

अर्थात – निर्गुण परमब्रह्म ने भक्तों को सुख देने के लिये, अधर्मियों का नाश करने के लिये अपने अंशों के रूप में मनुष्य रूप धारण किया। उन शाश्वत ब्रह्म ने राजा मनु और रानी शतरूपा को दिये गये वरदान को सफल करने के लिये राजा दशरथ के यहाँ राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के रूप जन्म लिया। जिससे समस्त

अयोध्या नगरी में उल्लास की तरंगें उठने लगी। सभी देवताओं एवं स्वयं ब्रह्माजी, शंकर जी ने भी वेष बदलकर अवध की वीथियों में जन्मोत्सव का सुख लूटा।

दोहा – **मास दिवस कर दिवस भा, मरम न जाने कोई।**
रथ समेत रवि थाकेऊ, निशा कवन विधि होई।।

अर्थात – पूरे एक महीने तक सूर्यनारायण अस्त होना ही भूल गये और रघुवंश में जन्में चारों राजकुमारों का जन्मोत्सव देखते रहे।

रामचरित मानस में सम्पूर्ण सद्गुणों से श्रीराम का यश तो त्रिभुवन में विख्यात है ही, पर गोस्वामी जी ने अनुसार उस यश का पताका का दण्ड (ध्वजा को पकड़ने वाला दण्डा) उनके अनुज लक्ष्मण हैं। मानस के अनुसार –

चौपाई – **बन्दऊ लछिमन पद जलजाता, सीतल, सुखद, भगत सुखदाता**
रघुपति कीरति विमल पताका, दण्ड समान भयेऊ जस जाका।।

चौपाई – **सेष सहस्त्रशीष जय कारन, सो अवतरऊ भूमि भय टारा।**
सदा सो सानुकूल रह मो पर, कृपासिन्धु सौमित्र गुनाकरा।।

प्रभु राम के अनुज लक्ष्मण का चरित्र जब हम मानस में पढ़ते हैं तो मुझे लगता है कि श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने में लक्ष्मण जी ने अपनी मन–वाणी–कर्म ही अर्पित नहीं किये बल्कि अपना पूरा जीवन ही सारहीन बना कर पूर्णरूपेण समर्पित हो गये। उनके नामकरण के समय गुरू वशिष्ठ ने उनका भविष्य समझते हुये कहा –

दोहा – **लच्छन धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार।**
गुरु वशिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार।।

इस प्रकार लक्ष्मण जी सभी गुणों से सम्पन्न एवं परम उदार थे। मानस में उन्हें शेषावतार के रूप में माना गया है –

दोहा – **मेघनाद सम कोटि सत, जोधा रहे उठाइ।**
जगदाधार शेष किम, उठै चले खिसिआइ।।

लक्ष्मण शक्ति के समय जब मेघनाद द्वारा छोड़ी गयी शक्ति से लक्ष्मण संज्ञा शून्य हो गये तथा पृथ्वी पर अचेत गिरे हुये थे, तब मेघनाद जैसे अनेकों योद्धा भी उन्हे पृथ्वी से उठा नहीं पाये तो खिसिया कर चले गये। फिर हनुमान जी उन्हे उठाकर भगवान राम के पास ले गये।

कुमार लक्ष्मण बाल्यावस्था से श्री राम के साथ रहकर छाया की भाँति उनका अनुसरण करते थे। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी राक्षसों के वध के लिये जब श्री राम को राजा दशरथ से माँगने आये तो उन्होंने कहा –

चौपाई – निसिचर सकल सतावहिं मोहि। मै जाचन आयहु नृप तोहि।।

तभी राम के साथ लक्ष्मण जी भी बहुत अल्प आयु में धनुष बाण लेकर राम के साथ गये –

चौपाई – "चले राम लक्ष्मण मुनि संगा।" (बालकाण्ड)

मुनि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा कर उन वनों को निशिचर विहीन करके राम लक्ष्मण आश्रम में हर क्षण गुरु सेवा में तत्पर रहते थे। रात्रि में छोटे भाई लक्ष्मण अपने भाई श्रीराम की चरण सेवा करके बार–2 प्रभु के द्वारा जाकर सोने की आज्ञा देने पर भी लक्ष्मण भक्तिवश उनके चरणों को अपने हृदय पर रखकर ही सो जाते थे –

चौपाई – चापत चरण लखन उर लाये, सभय सप्रेम परम सचु पाये।
पुनि–2 प्रभु कह सो बहु ताता, पौढे धरि उर पद जल जाता।। (बालकाण्ड)

उनके भातृप्रेम की अति पवित्र मर्यादा देख, पढ़कर मानस के श्रोताओं का हृदय भाव से ओत–प्रोत हो जाता है।

उपर्युक्त सन्दर्भों से मालूम होता है कि लक्ष्मण जी की भाई प्रति अति निष्ठा थी तथा वे राम जी की सम्पूर्ण जय–जयकार की भी इच्छा रखते थे। मुनि विश्वामित्र जी के आश्रम के लिये जब जनकपुरी से राजा जनक जी द्वारा धनुष यज्ञ के लिये आमन्त्रण जाता है, तब ऋषि के साथ दोनों भाई भी जनकपुरी जाते हैं। वहाँ होने वाले धनुष यज्ञ में संसार भर के वीरों के पराक्रम का परिचय भी होना था। लक्ष्मण जी को विशेष उत्कण्ठा थी कि उनके भाई राम धनुष तोड़ें एवं –

"त्रिभुवन जय समेत बैदेही"

तीनों लोकों में विजय के साथ जनकनन्दिनी सीताजी का वरण करें। वहीं जनकपुरी में प्रभु राम और लक्ष्मण गुरु वशिष्ठ द्वारा पूजा करने के लिये पुष्प लेने पुष्पवाटिका में गये। यह पुष्पवाटिका राजा जनक की निजी पुष्पवाटिका का जहाँ दोनों भाई मालीगणों से आज्ञा लेकर पुष्प लेने गये। तभी वहॉ वाटिका में

जनकदुलारी जानकी जी अपनी सखियों के साथ गौरी–पूजन के लिए आती हैं, बगीचे में सीता एवं रामजी का मिलन होता है, दोनों एक दूसरे की तरफ देखते हैं और परस्पर दोनों ही में सौन्दर्य देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं तथा दोनों ही एक–दूसरे की रूपमाधुरी को हृदय में बैठा लेते हैं। पुष्प लेकर राम–लक्ष्मण मुनि आश्रम में आते हैं किन्तु राम का हृदय सीता की तरफ ही मोहित रहता है। रात्रि के समय राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहते हैं कि – भाई लक्ष्मण देखो आज प्रकृति में कितना सुहावना व हृदय को आनन्दित करने वाला प्राकृतिक सौन्दर्य है। पूर्ण खिला हुआ चन्द्रमा जनकनन्दिनी के मुख के समान पवित्र और सौन्दर्य से परिपूर्ण है। इस प्रकार चिन्तन करते–करते सो गये। प्रातःकाल जागे तो श्रीराम को पुनः सीता के ध्यान में खोया हुआ देखकर लक्ष्मण को चिन्ता हुई। उन्होंने सोचा कि यदि इस प्रकार भैया श्रृंगाररस में खोये रहेगें तो धनुष तोड़ने के लिए पराक्रम व वीरता के भाव कैसे आ सकते हैं, जबकि सीता प्राप्ति की शर्त तो धनुष को तोड़ना है। रामचरित मानस में इस प्रसंग का बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है –

चौपाई – विगत निशा रघुनायक जागे, बन्धु विलोक कहन असलागे।
उयऊ अरूण अवलोकऊ ताता, पंकज कोक लोक सुखदाता।।

चौपाई – बोलऊ लखन जोरि जुग पानी, प्रभु प्रभाव सूचक मृदु वाणी।

दोहा – अरुणोदय सकुचे कुमुद, उड़गण ज्योति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन।।

अर्थात् प्रातः जागकर रामजी, लक्ष्मण से कहने लगे कि भाई देखो सूर्य के उदय होते ही कमल चकवा और जग कितना सुखी हो गया, जैसे सभी प्रेमीजनों को सूर्योदय के साथ इच्छित सुख की प्राप्ति होती है। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर विनय के साथ कहा – भैया यह अरुणोदय तो आपके पराक्रम की सूचना दे रहा है। सूर्य के उदय होते ही सभी चमकते हुये तारे उसी प्रकार ज्योतिहीन हो गये है जैसे धनुष–यज्ञ में आपके पहुँचने से सभी राजा शक्तिहीन हो गये हैं। इस प्रकार लक्ष्मण ने अपने बड़े भाई को बड़ी विनम्रता से इशारा किया कि भैया, इस समय आपके शक्ति व पराक्रम की आवश्यकता है।

लक्ष्मण का अपने भाई के प्रति प्रेम अति उच्चकोटि का था। वे किसी भी परिस्थिति में किसी के द्वारा भाई के प्रति अपयश सूचक शब्द नहीं सुन सकते थे। धनुष भंग नहीं हो पाया तो राजा जनक बड़े दुःखी हुये और अत्यन्त दुःखित होकर कहने लगे, मेरे द्वारा किया हुआ सीता स्वयंवर का प्रण सुनकर विभिन्न देशों से आये। सभी के द्वारा शर्त में प्रमाणिक धनुष को उठाना तो दूर रहा इंच मात्र हिला भी नहीं पाये। मुझे पता

होता कि सभी राजा शक्तिहीन है तो मैं ऐसी कठोर प्रतिज्ञा नहीं करता। हाय! अब शायद मेरी सीता कुँवारी रह जायेगी। मुझे नहीं मालूम था कि यह सारी पृथ्वी अब वीरों से खाली हो गयी है। इतना सुनते ही लक्ष्मण जी के क्रोध के कारण नथुने फूल गये और उन्होंने उस भरी सभा में समस्त गुरुजनों की लज्जा छोड़कर क्रोध में कहा –

दोहा 1 – रघुबंसिन्ह में जहँ कोई होई, तेहि समाज अस कहइ न कोई।
कहि जनक जस अनुचित बानी, विद्यमान रघुकुल मणि जानी।।

दोहा 2 – जो रघुवर अनुशासन पावौं, कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।
काचें घट जिमि डारो फोरी, सकऊँ मेरु मूलक जिमि तोरी।।

उनको इतना उत्तेजित देखकर श्रीराम ने उन्हे समझाया और बैठने के लिये इशारा किया। तभी गुरु विश्वामित्र जी ने राम को शुभ मुहूर्त में धनुष तोड़ने का आदेश दिया और रामजी ने जनकजी के सन्ताप के सहित धनुष तोड़ दिया। इसके बाद लक्ष्मण–परशुराम संवाद तो जगत विदित है ही। तभी पुरी के निवासियों ने लक्ष्मण जी की वीरता, बुद्धिमता एवं तेजस्विता की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

लक्ष्मण द्वारा राम प्रति अनुपम एवं दिव्य प्रेम का उदाहरण पूरे विश्व में दूसरा नहीं मिल सकता। रामजी के राज्याभिषेक की तैयारी पूरे अयोध्या में बड़े उत्साह के साथ मनायी जा रही थी। लक्ष्मण जी अपने बड़े भाई राम के दुलारत्व में बड़े मगन–2 महलों के भीतर बाहर बड़े चहकते हुये घूम रह थे। तभी अचानक महारानी कैकयी द्वारा राजा दशरथ से पुराने दो वरदान माँगे गये। जिसमें पहला वर अपने पुत्र भरत के लिये राजतिलक और दूसरे वरदान में – तुलसीकृत मानस के अनुसार

चौपाई – सुनहु प्राणपति भावत जी का, देऊँ एक वर भरतहि टीका।
दूसर वर मागेंऊँ कर जोरी, पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी।।

चौपाई – तापस वेष विशेष उदासी, चौदह वर्ष राम वनवासी।

श्रीराम को राज्य के बदले वनवास को सुनकर लक्ष्मण जी बड़े क्रोधित हुये और क्रोध के वशीभूत होकर माता कैकयी व पिता महाराज दशरथ के प्रति भी अमर्यादित शब्द कहने लगे। तब राम ने उन्हे ऐसा कहने से रोका तथा इतने उत्तेजित शब्द कहने पर उनकी भर्त्सना की। श्री ब्रह्मर्षि वाल्मीकि जी ने तो अपनी

रामायण में बहुत अधिक लिखा है, जिसका कुछ उदाहरण प्रस्तुत है, लक्ष्मण जी ने अत्यन्त दुःखी होकर कहा –

श्लोक 1 – **कथं त्व कर्मणाशक्तः कैकयी वश वर्तिनः।**
करिष्यसि पितुर्वाक्यम्, धर्मिष्ठं विगहिर्त्तमम्।।

आप अपने पराक्रम से सब कुछ करने में समर्थ होकर भी कैकयी के वश में रहने वाले पिता के अधर्मपूर्ण एवं निन्दित वचन का पालन कैसे करेंगे। (अयोध्याकाण्ड, वाल्मीकि रामायण)

श्लोक 2 – **तव लक्ष्मण जानामि मयि स्नेह मनुत्तमम्।**
विक्रमं चैव सत्यं च, तेजश्च सुदरासदम्।।

लक्ष्मण मेरे प्रति जो तुम्हारा उत्तम स्नेह है उसे मैं जानता हूँ। तुम्हारे पराक्रम, धैर्य और अतुलनीय तेज का मुझे ज्ञात है।

किन्तु तुलसीकृत रामचरित मानस में शब्दों का चयन बड़ी सजगता से किया गया है। जब रामजी वन जाने के लिए तत्पर हुये लक्ष्मण भी साथ चलने की आज्ञा माँगने लगे। भगवान राम ने कहा कि तुम्हारा भवनों में ही रहना आवश्यक है। क्योंकि प्रिय भाई भरत अयोध्या में नहीं है और माता–पिता मेरे जाने से अत्यन्त व्याकुल है। अतः अवध में रहकर वृद्ध व दुःखी पिता की सेवा करना ही इस समय तुम्हारा परम कर्तव्य है। लेकिन तव लक्ष्मण जी ने हाथ जोड़कर सविनय उत्तर दिया कि –

चौपाई – **गुरु–पितु–मातु न जानहु काहू, कहेऊ सुभाव नाथ पति आहू।**
मेरे सवहि एक तुम स्वामी, दीन बन्धु उर अन्तर्यामी।।

नाथ मेरा केवल आपसे ही सम्बन्ध व रिश्ता है तब रामजी ने सोचा कि मेरा भाई अति प्रेम के कारण मुझसे बिछुड़ना सहन नहीं कर पायेगा, सम्भव है प्राणत्याग दे, इस लिये साथ ले जाने को तैयार हो गये। केवल लक्ष्मण ही नहीं उनकी माता सुमित्रा भी उन्हें भातृ प्रेम के सत्पथ पर चलने के लिये सदैव उत्साहित करती रहती थी, अपने वात्सल्य की भावनाओं को दबाकर उन्होंन लक्ष्मण से कहा –

जों पे राम सिय बन जाहिं, अवध तुम्हार काज कछू नाहिं।

और इन्हीं सभी के मध्य लक्ष्मण की जीवनसंगिनी उर्मिला भी थीं, जिनका रामचरित मानस में तो कहीं उल्लेख नहीं है लेकिन वाल्मीकि रामायण में उन्हें साक्षात् त्याग, पतिव्रता, संयमी एवं तपस्या की प्रतिमूर्ति कहा है।

हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला को तेजपुंज का साकार स्वरूप कहकर सम्मानित किया है। अर्धांगिनी उर्मिला ने जब लक्ष्मण से साथ वन ले जाने की प्रार्थना की तो लक्ष्मण ने अपने धर्म और कर्तव्य की दुहाई देते हुये कहा कि ''प्राणप्रिये तुम भैया और भाभी की सेवा मे बाधक बन कर मुझे कर्तव्य से पदच्युत मत करो। तुम्हारा यह समर्पण मेरे लिये हमेशा आदरणीय रहेगा। तब उर्मिला ने लक्ष्मण से केवल यह माँगा कि –

आराध्य युग्म के सोने पर, निस्तब्ध निशा के होने पर।
तुम याद करोगे मुझे कभी, तो बस फिर मैं पा चुकी सभी।।

इतने पवित्र ह्रदय में मर्म भेदी ये उद्‌गार ही उर्मिला व लक्ष्मण के प्रेम व त्याग की पराकाष्ठा है। (साकेत अष्टम सर्ग)

वन में साथ जाकर लक्ष्मण प्रतिक्षण उनकी सेवा में तत्पर रहते थे और प्रभु को सुख देते हुये उनके लिये कुटिया बनाना, कन्द–मूल, फल लाना, पानी लाना, हवन आदि कि लिये समुचित साम्रगी उपलब्ध कराना केवल इतना ही नहीं बल्कि जब वे कुटी में शयन करते तो हर ऋतु, मौसम, स्थान की परवाह किये बिना उनकी सुरक्षा के लिये जागते रहते थे।

चौपाई – ''कछुक दूरि करि वान सरासन, जागन लगे बैठि वीरासन।।

इस प्रकार प्रभु राम का पूरा जीवन लक्ष्मण के बिना अधूरा था। रावण के पुत्र इन्द्रजीत का संहार कोई लक्ष्मण जैसे ही तपस्वी, जिन्होंने 14 वर्ष तक भूख, प्यास तथा निद्रा को परित्याग कर रखा हो, और विश्व में पूज्यनीय सती उर्मिला का पति हो, तथा जो मन, वचन, कर्म से अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो, वे लक्ष्मण ही हो सकते हैं। तुलसीकृत मानस में भगवान राम ने स्वयं कहा है कि –

दोहा – यथा पंख बिनु खग अति दीना, मनि बिनु फनि करबरि कर हीना।
अस मम जीवन बंधु बिनु तोहि, जो जड़ दैव जिआवै मोहि।।

भैया लक्ष्मण जैसे पंख बिना पक्षी नहीं रह सकते, मणि के बिना साँप नहीं रह सकता, उसी प्रकार मेरा जीवन भी तुम्हारे बिना हो जायेगा।

–: निष्कर्ष :–

जिनके जीवन चरित्र का आदि, मध्य और अन्त ही नहीं है, उन अनन्त भगवान की लीलाओं का निष्कर्ष भी क्या लिखा जा सकता है। तुलसीदास जी ने स्वयं रामचरित मानस में लिखा है कि –

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता, कहहिं–सुनहिं बहुविधि जेहि सन्ता।

फिर भी उपर्युक्त लेख को पढ़ने से यह निष्कर्ष निकलता है कि तुलसीदास जी ने अपनी ''मानस'' में जिन बहुमूल्य मणियों को पिरोया है वह सभी मणियाँ अनमोल एवं वेशकीमती हैं। उन्होंने लिखा है कि अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड के नायक भगवान श्रीराम ने पृथ्वी पर भक्तों को सुख देने और दुष्टों के संहार करने के लिये जन्म लिया और कहा भी –

''खर विहिन महि करऊँ मैं, भुज उठाय प्रण कीन्ह।।''

अर्थात मैं भुजा उठाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि सारी पृथ्वी से राक्षसों का नाश कर दूँगा। लेकिन यह प्रतिज्ञा लक्ष्मण के सहयोग के बिना कठिन हो जाती। सर्वसमर्थ प्रभु श्रीराम की हर आज्ञा, हर आदेश का पालन करने एवं उन्हे सुख देने के लिये लक्ष्मण जी हर क्षण तत्पर रहते थे। तभी तो उन्होंने सर्वप्रथम लक्ष्मण जी के परिचय के रूप में कहा है कि –

रघुपति कीरति विमल पताका, दण्ड समान भयउ जस जाका।

–: सन्दर्भ :–

1. रामचरित मानस गीताप्रेस गोरखपुर – भारतकोष ज्ञान का हिन्दी महासागर

2. रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन – शिवकुमार शुक्ल

3. रामविलास शर्मा वाणी प्रकाशन दिल्ली। भारतीय नवजागरण यूरोप : रामचरित मानस गीता प्रेस गोरखपुर

4. डॉ. गीतारानी शर्मा : रामचरितमानस में सांस्कृतिक चेतना।

5. मेघ, रमेश कुतल 1967 तुलसी आधुनिक वातायन से, दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।

6. मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत

7. वाल्मीकी रामायण

8. रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास

9. अमर उजाला

10. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं।